भारत में लैंगिक अंतर – दलित महिलाओं में आर्थिक अवसरों, शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनैतिक नेतृत्व में लैंगिक अंतर का एक अध्ययन

Mrs. Nisha[1], Prof. (Dr.) Anamika Kaushiva[2]

[1]Research Scholar, Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidhyalaya, Bareilly
[2]HOD, Research Supervisor, Economics Department Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidhyalaya, Bareilly

शोधसार

लैंगिक समानता एक मौलिक मानव अधिकार है और एक समृद्ध अर्थव्यवस्था में सतत् विकास की नींव है। समाज में लिंग के आधार पर बहिष्कार जो महिलाओं को अपने पूर्ण मानवाधिकारों को पहचानने से और प्रयोग करने में बाधाएं पैदा करता है, लैंगिक असमानता को जन्म देता है। लिंग आधारित भेदभाव के परिणामस्वरूप पुरुषों और महिलाओं के विकास के बीच 'लैंगिक अंतर' पैदा होता है। भारत में महिला सशक्तिकरण के उपायों के बावजूद उपलब्ध संसाधनों और अवसरों तक पहुंच में लिंग आधारित अंतराल बहुत बड़ा है। लैंगिक अंतर सूचकांक चार महत्वपूर्ण क्षेत्रों –आर्थिक भागीदारी और अवसर, शैक्षिक प्राप्ति, स्वास्थ्य और राजनैतिक सशक्तिकरण– तक महिलाओं और पुरुषों की पहुंच में अंतराल को मापता है। विश्व के 146 देशों के लिए 2024 में वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक में भारत का स्थान 129 वां है। भारत की जनसंख्या महिला जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अवसरों से वंचित हैं। यदि दलित महिलाओं की स्थिति पर ध्यान केन्द्रित किया जाए तो शिक्षा, रोजगार, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अन्य महिला से बहुत पिछडी हुई है। भारत में विकास प्रक्रिया सतत् और समावेशी नहीं है और दलित महिलाओं में लैंगिक अंतर के संकेतक स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि वह सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक असमानता और बहिष्करण का सामना करती हैं।यह शोध आलेख लैंगिक अंतर और लैंगिक अंतर सूचकांक की अवधारणा का विश्लेषण है औरप्राथमिक आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर दलित महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और अवसर, शैक्षिक प्राप्ति, स्वास्थ्य और राजनैतिक सशक्तिकरण तक पहुंच में लैंगिक अंतर का विश्लेषण है।

बीज शब्दः लैंगिक अंतर, वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक, लिंग असमानता, समावेश, दलित महिलाएं

परिचयः

जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग अभी भी भूख, बेरोजगारी, शोषण, अन्याय और उत्पीड़न से पीड़ित है। बीसवीं सदी की विकास नीतियों ने एक ओर भारतीय अर्थव्यवस्था में चहुंमुखी विकास किया वहीं दूसरी ओर आर्थिक–सामाजिक असमानता बढ़ा दी। गरीब, महिला, दलित, अछूत और ऐसे कई वर्ग देश के विकास कार्यक्रमों के लाभ से प्रायः अछूते रहे हैं तथा मूलभूत सुविधाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पीने के पानी, बिजली की सुविधा इत्यादि से वंचित रह गए हैं। विभिन्न समूहों में सामाजिक और आर्थिक जीवन स्तर में एक व्यापक अंतर अभी भी है और असमानता की खाई बढ़ती जा रही है।सामाजिक, आर्थिकएवं राजनैतिक असमानता को दूर करने से और समावेशी समाज की स्थापना से हाशिए पर स्थित और बहिष्कृत समूहों का विकास हो सकता है। समावेशी विकास बहिष्कृत समूहों की समानता सुनिश्चित करता है तथा सभी के लिए एक निष्पक्ष वातावरण का निर्माण करता है। समतामूलक समाज शर्म व दबाव मुक्त समाज होता है जिसमें सभी वर्ग को खुशहाल जीवन जीने का समान अवसर मिलता है। वहां मानवाधिकारों का सम्मान तथा प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान की रक्षा की जाती हो। वर्तमान सामाजिक ढांचा सामाजिक व आर्थिक विषमताओं के कारण समावेशी नहीं है। एक तथ्य जो यह साबित करता है वह समाज में लैंगिक असमानता है।

लैंगिक समानता एक मौलिक मानव अधिकार है और एक समृद्ध अर्थव्यवस्था में सतत् विकास की नींव है। समाज में लिंग के आधार पर कोई भी बहिष्कार या प्रतिबंध, जो लड़कियों और महिलाओं को अपने पूर्ण मानवाधिकारों को पहचानने से और प्रयोग करने में बाधाएं पैदा करता है, लैंगिक असमानता को जन्म देता है। दुनिया भर के सभी समाजों में जिस क्षण से लड़कियां पैदा होती हैं, उन्हें लड़कों की अपेक्षा घर, स्कूल और समाज में संसाधनों और अवसरों तक पहुंच में लिंग आधारित भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इस लिंग आधारित भेदभाव के परिणामस्वरूप पुरुषों और महिलाओं के विकास के बीच 'लैंगिक अंतर' (Gender Gap) पैदा होता है। भारत में, नियोजित विकास और महिला सशक्तिकरण के उपायों के बावजूद उपलब्ध संसाधनों और अवसरों तक पहुंच में लिंग आधारित अंतराल बहुत बड़ा है। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बिना विकास सतत् और समावेशी नहीं हो सकता। देश में उपलब्ध संसाधनों और अवसरों तक पहुंच में लिंग आधारित अंतराल किसी भी अर्थव्यवस्था में लैंगिक असमानता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। लैंगिक असमानता की प्रकृति और कारण को समझने और उसको कम करने की उचित नीतियों के लिए लैंगिक अंतर विश्लेषण आवश्यक है।

साहित्य समीक्षाः

शोध आलेख लिखने से पहले संबंधित विषय पर पूर्व प्रकाशित शोध पत्रों, आलेखों, रिपोर्ट और पुस्तकों का व्यापक रूप से अध्ययन एवं अवलोकन किया गया है।

भारत की विकास की रणनीति का विश्लेषण करते हुए **कुमारी डिंपल**[1] ने निष्कर्ष निकाला कि भारतीय अर्थव्यवस्था विकास कर रही है लेकिन सामाजिक असमानता को बढ़ा रही है। विकास की वर्तमान अमानवीय व्यवस्था ने हाशिए पर जीवन जी रहे समूहों के सामाजिक एवं आर्थिक ढांचे को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। समावेशी विकास और समतामूलक समाज की अवधारणा को समझाते हुए कुमारी डिंपल ने निष्कर्ष निकाला कि भारत में समग्र विकास नहीं है। अपने शोध पत्र में **भानुमूर्ति, एन.आर. वर्षा सिवराम**[2]ने कहा कि गरीबोन्मुख विकास दृष्टिकोण का मतलब ऐसे विकास से है, जिसमें गरीबों को लाभ पहुंचे। नीतियाँ और कार्यक्रम सामान्यतः उन लक्ष्यों को ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं,जिनके अंतर्गत गरीबों के बीच आय के पुनर्वितरण पर जोर हो।

गौतम, डॉ ज्ञान प्रकाश (2011)[3] ने अपनी पुस्तक में स्पष्ट रूप से कहा है कि वैश्वीकरण के दौर में बिना महिला सशक्तिकरण के विकास असंभव है तथा इसी समाज में दलित महिलाओं के सशक्तिकरण को अनदेखा नही किया जा सकता है। पुस्तक में दलित महिलाओं से सम्बन्धित समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का उनके विविध पक्षों का सशक्तिकरण एवं वैश्वीकरण के सम्बन्ध में विधिवत प्रस्तुत किया गया है ।

थोराट, सुखदेव (2017)[4] ने दलितों की स्थिति प्रस्तुत करने के साथ उनकी स्थिति में बदलाव का अध्ययन किया है। उनके अनुसार विभिन्न मानव विकास और संबंधित सामाजिक एवं आर्थिक सूचकों के सम्पूर्ण भारत एवं राज्य स्तरीय विश्लेषण के माध्यम से देश में दलितों की स्थिति स्पष्ट है। दलित मुख्य धारा के विकास मार्ग से अलग हैं और यह उनके हाशिये पर रहने की मौजूदा स्थिति का कारण है। थोराट जी ने छुआछूत, सामाजिक भेदभाव व अत्याचार जैसे व्यवहारों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया है।

सरबू विजय[5] ने लैंगिक भेदभाव और असमानता के संबंध में भारत की स्थिति पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार भारत में लिंग अंतर के मुख्य कारण महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों में असमानता और उनकी दुर्दशा की मौन स्वीकृति है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि लड़कियों को उच्च स्तरीय शिक्षा से, सामाजिक एकीकरण से, महिला रोजगार सेऔर सक्रिय राजनीति में शामिल करके लिंग अंतर को कम किया जा सकता है।

बाओपिंग शांग, आईएमएफ रिपोर्ट 2022[6]में बताते हैं कि लैंगिक असमानता लैंगिक पूर्वाग्रह और सामाजिक मानदंडों का परिणाम है जो महिलाओं के अधिकारों और अवसरों को प्रतिबंधित करते हैं। लिंग अंतराल विभिन्न सामाजिक और आर्थिक संकेतकों में पुरुषों और महिलाओं के बीच देखे गए मतभेदों में परिलक्षित होता है। लिंग अंतराल महिलाओं के लिए असमान अधिकारों, जिम्मेदारियों और अवसरों के कारण होता है और महिलाओं की वरीयता या पुरुषों और महिलाओं के बीच तुलनात्मक लाभ से प्रेरित होता है। शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल जैसी सरकारी नीतियोंऔर महिलाओं के अधिकारों और अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए कानून और नियम लिंग अंतराल और असमानता को कम कर सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य:

यह शोध आलेख निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास है:

- लैंगिक अंतर और लैंगिक अंतर सूचकांक की अवधारणा को समझना।
- सतत् और समावेशी विकास के लिए लैंगिक अंतर को कम करने के महत्व को समझना।
- प्राथमिक आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर दलित महिलाओं में लैंगिक अंतर का विश्लेषण करना ।
- लैंगिक अंतर को कम करने के लिए सरकार के नीतिगत उपाय का विश्लेषण करना।

शोध परिकल्पना:

भारत में विकास प्रक्रिया सतत् और समावेशी नहीं है और दलित महिलाओं मेंलैंगिक अंतर के संकेतक स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि वह सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनैतिक असमानता और बहिष्करण का सामना करती हैं।

शोध पद्धति:

वर्तमान अध्ययन में गैर–संभाव्यता या उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन और निर्णय प्रतिचयन के आधार पर नमूने का चयन किया गया।अध्ययन तहसील बहेडी, जनपद बरेली, उत्तर प्रदेश में दलित महिलाओं पर केन्द्रित है। तहसील में लगभग 377 गांव हैं। तहसील बहेडी में दलित महिलाएं (42943) कुल दलित जनसंख्या (90307) का 47.55 फीसदी का प्रतिनिधित्व करतीं हैं और अशिक्षा,कुपोषण, शोषण, अत्याचार आदि से पीडित हैं। सर्वाधिक दलित जनसंख्या वाले गांव उतर्सिया सुमखिया का चयन किया गया जिसमें दलित महिला जनसंख्या 1,037 है। दलित महिलाओं में से 20–55 वर्ष के आयु वर्ग के बीच 100 महिलाओं का चयन किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया। द्वितीयक आंकड़ों के लिए जनगणना 2011,योजना आयोग, सामाजिक न्याय मंत्रालय की रिपोर्ट, आर्थिक सर्वेक्षण, विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट, वैश्विक लिंग अंतर रिपोर्ट और विभिन्न पत्रिकाओं, लेखों और वेबसाइटों आदि का उपयोग किया गया। प्राथमिक आंकड़ेका संकलन साक्षात्कार, अनुसूची,अवलोकन पद्धति से किया गया।

विश्लेषण:

विकास के परिणाम के समाज में कुछ महत्वपूर्ण निर्देशक एवं संकेतक हैं– जीवन स्तर में सुधार, निर्धनतामें कमी, शिक्षा के स्तर में सुधार, सामाजिक न्याय में बढ़ोतरी, जीवन सुरक्षा एवं कल्याण, पिछड़ों व अविकसित समूहों का उत्थान और वर्ग असमानताओं की समाप्ति हैं। विश्व आर्थिक मंच ने 2006 में अपनी रिपोर्ट में कहा कि, ”एक विशेष सामाजिक और आर्थिक चुनौती संसाधनों और अवसरों तक उनकी पहुंच में महिलाओं और पुरुषों के बीच लगातार अंतर है। यह अंतर न केवलमहिलाओं केजीवन की गुणवत्ता को कम करता है, बल्कि राष्ट्रों के दीर्घकालिक विकास और कल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण जोखिम भी पैदा करता है“।[7] इस लैंगिक अंतर के महत्व और सतत् विकास पर इसके प्रभाव पर जोर देने के लिए विश्व आर्थिक मंच ने 2006 ने चार महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं और पुरुषों के बीच अंतर के आकार को मापने के लिए एक नई पद्धति प्रस्तुत की – आर्थिक भागीदारी और अवसर, शैक्षिक प्राप्ति, स्वास्थ्य और राजनैतिक सशक्तिकरण।[8] दूसरे शब्दों में, लैंगिक अंतर सूचकांक उपलब्ध संसाधनों और अवसरों के वास्तविक स्तर के बजाय संसाधनों और अवसरों तक पहुंच में लिंग आधारित अंतराल को मापता है। यह देशों को महिला सशक्तिकरण के स्तर के बजाय चुने हुए संकेतक में महिलाओं और पुरुषों के बीच का अंतर (लैंगिक अंतर सूचकांक) के अनुसार देशों को श्रेणी देता है।सूचकांक 0 से 100 के पैमाने पर स्कोर होता है और स्कोर की व्याख्या समानता की ओर तय की गई दूरी (यानी लैंगिक अंतर का वह प्रतिशत जो एक साल में कम हो गया है) के रूप में की जाती है।

विश्व के 146 देशों के लिए 2024 में वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक स्कोर[9] 68.5 था और रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्तमान दर पर जिस पर अंतर को कम किया जा रहा है, दुनिया भर में पूर्ण लिंग समानता प्राप्त करने में 131 वर्ष लगेंगे। आइसलैंड 93.5 के वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक स्कोर के साथ सबसे अधिक लिंग–समान देश है। 64.1 लिंग

अंतर स्कोर के साथ 146 देशों में से भारत का स्थान 129 वां है। भारत के पड़ोसी पाकिस्तान 145वें, बांग्लादेश 99वें और चीन 106वें स्थान पर हैं। सारणी 1 में 2024 में भारत की स्थिति स्पष्ट है।

सारणी–1लैंगिक अंतर सूचकांक 2024: भारत की स्थिति

सूचकांक	**लैंगिक अंतर सूचकांक स्कोर और श्रेणी**
लैंगिक अंतर सूचकांक	0.641 129th
आर्थिक भागीदारी और अवसर	0.398 142nd
शैक्षिक प्राप्ति	0.964 112th
स्वास्थ्य और उत्तरजीविता	0.951 142nd
राजनैतिक सशक्तिकरण	0.25165th

स्रोतः विश्व आर्थिक मंच, वैश्विक लैंगिक अंतर रिपोर्ट 20239

आर्थिक भागीदारी और अवसर में भारत की लैंगिक समानता 39.8है और इसका अर्थ है कि भारत में महिलाओं को इस क्षेत्र में लैंगिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। भारत ने शिक्षा में लैंगिक समानता में सुधार हासिल किया है और राजनैतिक सशक्तिकरण समानता 25.1 है।

भारत में महिलाएंः

भारत की लगभग आधी जनसंख्या महिलाओं की है। महिला जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अवसरों से वंचित है, हाशिए पर है। निर्धनता, अस्वस्थता, शारीरिक दुर्बलता, अशिक्षाऔर सामाजिक पूर्वाग्रहों के कारण उनकी दयनीय स्थिति है। महिलाएं निर्णय प्रक्रिया और भागीदारी में सबसे पीछे है। जटिल सामाजिक संरचना के कारण भ्रूण–हत्या, बालिकाओं का स्कूल में बहिष्कार, कार्यस्थल का महिलाओं का शोषण, घरेलू हिंसा और यौन अपराध की समस्याएं हैं।

यदि दलित महिलाओं की स्थिति एवं विकास पर ध्यान केन्द्रित किया जाए तो शिक्षा, रोजगार, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक एवं राजनैतिक प्रत्येक क्षेत्र में अन्य महिला वर्ग से बहुत पिछडी हुई है। दलितों के सन्दर्भ में सामाजिक एवं आर्थिक संकेतक दलितो के विकास पर प्रकाश डालते हैं।[10]

- प्राथमिक शिक्षा में 51 प्रतिशत दलित विद्यार्थी प्रतिवर्ष विद्यालय छोड देते हैं दलित बालिकाओं में यह संख्या 67 प्रतिशत है।
- दलित बालिकाओं में शिशु मृत्यु दर प्रति 1000 जीवित जन्म पर 40 आकलित की गई जो समस्त सामाजिक समूहों में सबसे अधिक है, उच्च जातियों के लिए यह 30 है।
- स्वरोजगार में मात्र 37.7 प्रतिशत दलित महिलाएं ही कार्यशील हैं जबकि अन्य वर्गीय महिलाओं में यह संख्या 55 प्रतिशत है।
- अनौपचारिक श्रम में दलित महिलाओं की सहभागिता 41.8 प्रतिशत, सेवा क्षेत्र में 23.3 प्रतिशत, उद्योग क्षेत्र में मात्र 19.8 प्रतिशत दलित महिलाएं ही कार्यरत हैं।
- अध्ययन में दलित महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और अवसर, शैक्षिक प्राप्ति, स्वास्थ्य और राजनैतिक सशक्तिकरण के स्तर पर प्रकाश डालने के लिए आंकडों का विश्लेषण किया गया।

उत्तर प्रदेश के जनपद बरेली के तहसील बहेडी में सर्वाधिक दलित जनसंख्या वाले गांव उतर्सिया सुमखिया का चयन कर 100 दलित महिलाओं का अध्ययन किया गया जिनका आयु स्तर सारणी एक में स्पष्ट है :

सारणी 1 : दलित महिलाओं का आयु स्तर

आयु स्तर (वर्षों में)	संख्या
20–25	9
25–30	23
30–35	19
35–40	8
40–45	27
45–50	9
50–55	5
कुल	100

स्रोत : व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

उतर्सिया सुमखिया में सर्वाधिक 27 प्रतिशत महिलाएं 40–45 आयु वर्ग के मध्य और 5 प्रतिशत महिलाएं 50–55 आयु वर्ग के मध्य हैं। 38 प्रतिशत महिलाएं चमार (जाटव) और 9 प्रतिशत महिलाएं बेलदार जाति की हैं।

दलित महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और अवसरः

महिलाओं की आर्थिक भागीदारी का अर्थ है कि वे आर्थिक गतिविधियों में किस हद तक भाग लेती हैं, उत्पादक संसाधनों तक पहुँच और नियन्त्रण, आर्थिक अवसर तक पहुँच, अपनी आय और बचत पर नियंत्रण और परिवार में आर्थिक निर्णय लेने में सार्थक भागीदारी की स्वतन्त्रता। अध्ययन में दलित महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और अवसर का विश्लेषण करने के लिए महिलाओं के परिवार की मासिक आय, रोजगार, स्वयं की कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता एकल बैंक खाता जैसे कुछ बिन्दुओं का अध्ययन किया।

सारणी 2:न्यादर्श दलित महिलाओं के परिवार की मासिक आय

दलित महिलाओं के परिवार की मासिक आय	संख्या
2000–4000	11
4000–6000	25
6000–8000	43
8000–10000	19
10000 से अधिक	2
कुल	100

कुल न्यादर्श मे सर्वाधिक 43 प्रतिशत महिलाओं के परिवार की मासिक आय रूपये 6000–8000 के मध्य है केवल 2 प्रतिशत महिलाओं के परिवार की मासिक आय रूपये 10000 से अधिक पायी गयी। अध्ययन में पाया गया कि 78 प्रतिशत महिलाओं के परिवार के पास कृषि योग्य स्वयं की भूमि उपलब्ध नही है। 49 प्रतिशत महिलाओं के मकान का स्वरूप कच्चा–पक्का पाया है। 41 प्रतिशत महिलाओं का मकान कच्चा और केवल 10 प्रतिशत महिलाओं का मकान पक्का था निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि दलित परिवार की आर्थिक स्थितिनिम्नहै।53 प्रतिशत महिलाएं भोजन पकाने के लिए मिट्टी का चुल्हा का प्रयोग करतीहैं। अधिकतम महिलाओं के पेयजल का स्त्रोत उनके इलाके में लगा हुआ हैंडपम्प है। दलित महिलाएं अन्य समुदाय के इलाकों में लगे हैंडपम्प से पानी नही भर पाती हैंक्योकि समाज में अन्य वर्ग दलित वर्ग से छुआछुत मानते हैं।

सारणी 3:महिलाओं की आय का स्त्रोत या रोजगार

आय का स्त्रोत या रोजगार	संख्या	प्रतिशत
दैनिक मजदूरी	42	53.84
नौकरी	5	6.4
सिलाई–कढाई	14	17.94
निजी व्यवसाय	3	3.8
साफ सफाई	14	17.94
कुल	**78**	**78**

53.84 प्रतिशत महिलाएं दैनिक मजदूरी करती हैं। उच्च वर्गीय लोंगों के घरों में साफ– सफाई जैसे कार्यो में लगी हुई हैं। महिलाओं में कौशल, योग्यता, व्यावसायिक प्रशिक्षण का स्तर अत्यन्त ही निम्नहै जिसके कारण वह कोई व्यवसाय या सम्मानजनक कार्य नही कर पा रही हैं।

सारणी 4 : स्वयं की कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता

स्वयं की कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता	संख्या
हाँ	22
नही	78
कुल	**100**

78 प्रतिशत महिलाओं के परिवार के पास स्वयं की कृषि योग्य भूमि उपलब्ध नही हैं। वह सीमान्त कृषकों और बंधुआ मजदूर के रूप में कार्यरत हैं। यदिपरिवार के पास परिवहन साधन, पक्का मकान, दुकान और पशु इत्यादि हैं तो ज्यादातर परिवारों में सम्पत्ति का स्वामित्व पिता या पति के नाम पाया गया।

सारणी 5 : दलित महिलाओं के एकल बैंक खाते का विवरण

बैंक खाता	संख्या
खुलवाया है	43
नही खुलवाया है	57
कुल	**100**

दलित महिलाओं की आर्थिक भागीदारी अत्यन्त निम्न है इसका संकेत इससे मिलता है कि केवलकुल न्यादर्श में 43 प्रतिशत महिलाओं ने अपना एकल बैंक खाता खुलवाया है। यह भी पाया गया कि महिलाओं ने मुख्य रूप से प्रधानमंत्री जन–धन योजना के अर्न्तगत खाता खुलवाये हैं।

दलित महिलाओं का शैक्षणिक स्तर :

लिंग अन्तराल का आकलन करने वाला एक अन्य कारक महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि अर्थात साक्षरता, शिक्षा का स्तर, व्यावसयिक कौशल आदि है। तदनुसार, इस अध्ययन में दलित महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का मूल्यांकन किया गया।

सारणी 6 : दलित महिलाओं का शैक्षणिक स्तर

शैक्षणिक स्तर	संख्या
अशिक्षित	32
पूर्व माध्यमिक	38
हाईस्कूल	13
मैट्रिक	10
स्नातक	5
स्नातकोतर	2
कुल	**100**

उत्तरदात्रियों में 68 प्रतिशत महिलाएं शिक्षित और 32 प्रतिशत महिलाएं अशिक्षित हैं। 13 प्रतिशत महिलाएं हाईस्कूल तक और मात्र 2 प्रतिशत महिलाएं स्नातकोतर स्तर तक की शिक्षा प्राप्त हैं।

सारणी 7: महिलाओं को सरकारी व्यावसायिक प्रशिक्षण

सरकारी व्यावसायिक प्रशिक्षण	संख्या
सिलाई/कढाई/बुनाई	26
कम्प्युटर/टायपिंग	2
खाद्य पदार्थ बनाने हेतू कोर्स	0
ब्यूटी पार्लर कोर्स	0
कुल	28

दलित महिलाओं में केवल 28 प्रतिशत महिलाओं ने सरकारी योजनाओं/कार्यक्रमों के अर्न्तगत व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

स्वास्थ्य और कल्याण :

स्वास्थ्य और कल्याण व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य को संदर्भित करता है। इसमें स्वास्थ्य को बढावा देना, बीमारी को रोकना, समानता प्राप्त करना और स्वस्थ वातावरण बनाना शामिल है। सस्ती और सुलभ चिकित्सा सुविधाओं, मातृत्व और बाल स्वास्थ्य सुविधाओं और स्वच्छता स्वास्थ्य और भलाई के लिए आवश्यक है। दलित महिलाओं के स्वास्थ्य का आकलन करने के लिए, मातृत्व स्वास्थ्य का विश्लेषण किया गया था। अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांशदलित महिलाएं घर पर बच्चों को जन्म देने का विकल्प चुन रही हैं क्योंकि निजी चिकित्सा खर्च वहन करने योग्य नही है और सरकारी अस्पतालों में सरकारी योजनाओं सुरक्षित मातृत्व आश्वासन योजना, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम जैसी योजनाओं का लाभ नही मिल पाता है।

सारणी 8:दलित महिलाओं के बच्चे का जन्म स्थल

जन्म स्थल	संख्या
घर पर	81
प्राइवेट अस्पताल	2
सरकारी अस्पताल	17
कुल	**98**

इसके अलावा दलित महिलाओं का बहुत कम प्रतिशत सरकारी स्वास्थ्य नीतियों द्वारा दिए गए लाभों को प्राप्त करता है जैसा कि सारणी 9 में स्पष्ट है।

सारणी 9: विभिन्न सरकारी स्वास्थ्य नीतियों के लाभ

योजना का नाम	संख्या
सुरक्षित मातृत्व आश्वासन सुमन योजना	26
जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम	21
आयुष्मान कार्ड	62

मानसिक स्वास्थ्य समग्र स्वास्थ्य ओर भलाई का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक भलाई शामिल है। एक महिला का मानसिक स्वास्थ्य प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है यदि वह घरेलू हिंसा से पीडित है। लैंगिक पक्षपाती समाज में लडकियां और महिलाएं अपने घरों के भीतर घरेलू हिंसा का शिकार होती हैं।

सारणी 10 : दलित महिलाओं पर घरेलू हिंसा

घरेलू हिंसा	संख्या
अकसर	62
कभी–कभी	34
कभी नही	4
कुल	**100**

62 प्रतिशत महिलाओं के साथ अकसर घरेलू हिंसा हुईहै और 4 प्रतिशत महिलाओं पर कभी घरेलू हिंसा नही हुई है। यौन उत्पीडन भी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाला एक कारक है।दलितमहिलाएंसमाज में सामान्यता किसी न किसी रूप में होने वाले यौन शोषण का सामना करती हैं।

सारणी 10 : दलित महिलाओं पर यौन शोषण

यौन शोषण	संख्या
हाँ	71
नही	29
कुल	100

दलित महिलाएं स्वयं पर होने वाले यौन शोषण का विरोध स्वयं चेतावनी से करती हैं या परिवार में शिकायत करती हैं। सर्वाधिक महिलाएं मूक रह कर शोषण को सहन करती हैं और शोषण के विरोध में कोई कदम उठाना उचित नही समझती।

राजनैतिक सशक्तिकरण :

लैंगिक समानता के लिए महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी एक बुनियादी शर्त है। महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी और नेतृत्व महिलाओं में उनके मानवाधिकारों का एहसास कराने में सहायक होता है। राजनैतिक सशक्तिकरण की दिशा में पहला कदम मतदान करने की शक्ति का प्रयोग करने का अधिकार है। समूह चर्चा में पाया गया कि 73 प्रतिशत दलित महिलाओं के पास मतदान कार्ड हैलेकिन वह स्वेच्छा से मतदान करने के लिए स्वतन्त्र नही है। परिवार द्वारा जिस चुनाव चिन्ह पर मोहर लगाने को कहा जाता है वह उसी चुनाव चिन्ह पर मतदान करती है।अपने मतदान करने के अधिकार का सही उपयोग नही कर रही हैं।

सारणी 11 : दलित महिलाओं के पास मतदान कार्ड

मतदान कार्ड	संख्या
हाँ	73
नही	27
कुल	100

इस प्रकार उपरोक्त ऑकडों के विश्लेषण से लैंगिक अंतर के चार संकेतकों के संदर्भ में चुने गए नमूनों में दलित महिलाओं की स्थिति का पता चलता है। चुने हुए संकेतक में गांव उतर्सिया सुमखिया दलित की महिलाएं सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनैतिक असमानता और बहिष्करण का सामना करती हैं।

भारत में लैंगिक अंतराल को कम करने के लिए सरकार के नीतिगत उपाय:
देश के लैंगिक अंतराल सूचकांक स्कोर में भारत के स्थान में सुधार के लिए भारत सरकार ने सूचकांक के सभी चार पहलुओं – आर्थिक अवसरों, शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनैतिक नेतृत्व में कई प्रयास किए हैं। प्रत्येक में कुछ महत्वपूर्ण उपाय हैं:

महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में सुधार के प्रयास

- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना बेहतर आजीविका हासिल करने के लिए उद्योग–प्रासंगिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए।
- सुकन्या समृद्धि योजना।
- गैर–कृषि क्षेत्र में सूक्ष्म उद्यमों में स्वरोजगार सृजित करने के लिए प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम।
- 11–18 आयु वर्ग की लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए जीवन कौशल, घरेलू कौशल और व्यावसायिक प्रशिक्षण की योजना।
- महिला उन्मुख रोजगार सृजन कार्यक्रम।
- कामकाजी महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कामकाजी महिला छात्रावास।

शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए प्रयास

- शिक्षा के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम।
- समग्र शिक्षा योजना में सभी स्कूलों में लिंग–पृथक शौचालयों का प्रावधान।
- लड़कियों की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक संवेदीकरण कार्यक्रम।
- रानी लक्ष्मी बाई आत्मरक्षा प्रशिक्षण और विशेष आवश्यकता वाली बालिकाओं के लिएवजीफा।
- कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (शैक्षिक रूप से पिछडेब्लॉकों में लाभवंचित समूहों की बालिकाओं के लिए)।
- शिक्षा के सभी स्तरों पर लिंग संतुलन में सुधार करने के लिए लड़कियों के लिए छात्रवृत्ति योजनाएं।

स्वास्थ्य और पोषण में सुधार के लिए प्रयास

- मिशन पोषण 2.0 – कुपोषण को कम करने के लिए स्कूलों में पोषण सामग्री, वितरण, मध्याह्न भोजन की पहुंच को मजबूत करने के लिए ।
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना – गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को मातृत्व लाभ प्रदान के लिए ।
- प्रजनन, मातृ, नवजात शिशु, किशोर स्वास्थ्य प्लस पोषण योजना – गर्भवती महिलाओं और बीमार शिशुओं को सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थाओं तक पहुंच प्रदान करने के लिए
- जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम – संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहित करने के लिए गर्भवती महिलाओं को वित्तीय सहायता।

- प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान – गर्भवती महिलाओं को व्यापक और गुणवत्तायुक्त एएनसी प्रदान करने के लिए।
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना – निःशुल्क एलपीजी सिलेंडर उपलब्ध कराने के लिए।

राजनैतिक भागीदारी में सुधार के लिए प्रयास

- महिलाओं के लिए पंचायती राज संस्थाओं में 33 प्रतिशत सीटों का आरक्षण।
- शासन प्रक्रियाओं में प्रभावी रूप से भाग लेने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए महिला पंचायत हितधारकों की क्षमता का निर्माण।

निष्कर्ष:

अकेले आर्थिक विकास नीतियां लैंगिक समानता सुनिश्चित नहीं कर सकती हैं। लैंगिक असमानता–सुधारात्मक नीतियां जो विशेष रूप से दलितों में लैंगिक अंतर को कम करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं आवश्यक हैं। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि चार प्राथमिकता वाले क्षेत्र दलित महिलाओं के उत्थान में मदद कर सकते हैं। पहला, मानव पूंजी में लैंगिक अंतराल को कम करना – दलित महिलाओं की मृत्यु दर को कम करना और दलितों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना। दूसरा, आय, रोजगार अवसरों, और उत्पादकता तक पहुंच में लैंगिक अंतराल को कम करना। तीसरा, समाज में दलित महिलाओं का शोषण और बहिष्कार कम करना। चौथा, राजनैतिक सशक्तिकरण और दलित महिलाओं की भागीदारी। लैंगिक समानता सतत् समावेशी की नींव है।

सन्दर्भ सूची –

1.कुमारी, डि.(2015).”समावेशी विकास से ही बनेगा”. योजना, अंक 8, पृ. 31–36.
2. भानुमूर्ति, एन.आर., वर्षा,एस. (2015).”आर्थिक वृद्धि तथा सामाजिक विकास”. योजना, अंक 8, पृ. 21–24.
3. गौतम, डॉ पी.जी. (2011). ”दलित महिला सशक्तिकरण एवं वैश्वीकरण“. वाराणसीः काला प्रकाशन.
4. थोराट,एस. (2017). ”भारत मे दलित एक समान नियति की तलाश“. नई दिल्ली.सेज पब्लिकेशन्स इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, प्रथम संस्करण.
5. Sarabu,V. (2022). “Gender Gap- Special Reference to India”.Conference Paper, Lucknow University. https://www.researchgate.net/publication/357551682_GENDER_GAP_SPECIAL_REFERENCE_TO_INDIA
6. Baoping, S. (2022).“Tackling Gender Inequality: Definitions, Trends, and Policy Designs”. IMF Working Paper, Dec. https://www.imf.org/en/Publications/WP/Issues/2022/12/02/Tackling-Gender-Inequality-Definitions-Trends-and-Policy-Designs-525751
7.World Economic Forum,The Global gender gap Report 2006. https://www.weforum.org/publications/global-gender-gap-report-2006/Ibid.
8. World Economic Forum, Global Gender gap Report 2023.https://www.weforum.org/publications/global-gender-gap-report-2023/digest/
9. Dalit Women Rise For Justice Status Report 2021 http://www.ncdhr.org.in/wp-content/uploads/2021/04/Dalit-Women-Rise-For-Justice-Status-Report-2021.pdf
10.Mitra, S. (2014).“Major dimensions of inequality in India: Gender”.https://www.cbgaindia.org/policy-brief/major-dimensions-of-inequalities-in-india-gender/
11. Ministry of Women and Child Development GLOBAL GENDER GAP REPORT Posted On: 17 DEC 2021. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1782628
12. Human Development Report. Gender Inequality Index. https://hdr.undp.org/data-center/thematic-composite-indices/gender-inequality-index#/indicies/GII

Websites

www.undp.org
www.worldbank.org

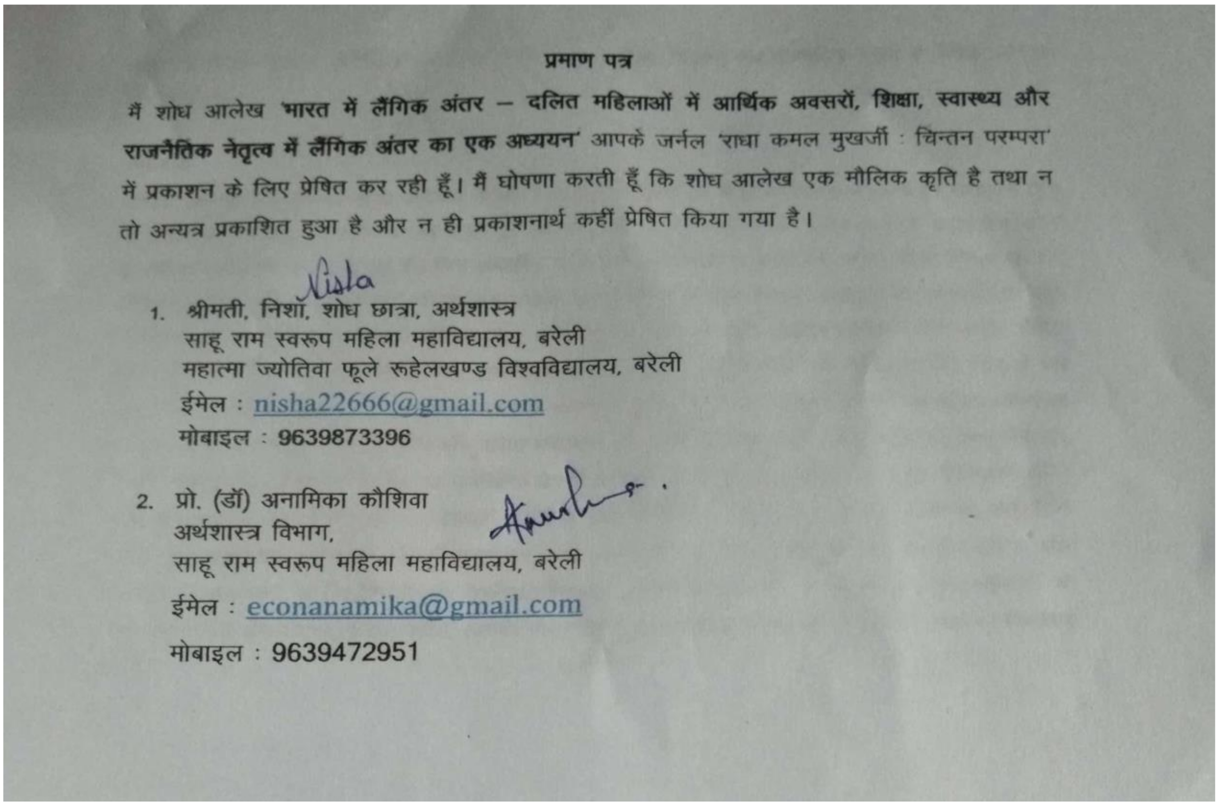

प्रमाण पत्र

मैं शोध आलेख **'भारत में लैंगिक अंतर – दलित महिलाओं में आर्थिक अवसरों, शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनैतिक नेतृत्व में लैंगिक अंतर का एक अध्ययन'** आपके जर्नल 'राधा कमल मुखर्जी : चिन्तन परम्परा' में प्रकाशन के लिए प्रेषित कर रही हूँ। मैं घोषणा करती हूँ कि शोध आलेख एक मौलिक कृति है तथा न तो अन्यत्र प्रकाशित हुआ है और न ही प्रकाशनार्थ कहीं प्रेषित किया गया है।

1. श्रीमती, निशा, शोध छात्रा, अर्थशास्त्र
   साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली
   महात्मा ज्योतिवा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
   ईमेल : nisha22666@gmail.com
   मोबाइल : 9639873396

2. प्रो. (डॉ) अनामिका कौशिवा
   अर्थशास्त्र विभाग,
   साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली
   ईमेल : econanamika@gmail.com
   मोबाइल : 9639472951

प्रथम लेखक
श्रीमती निशा, शोध छात्रा,
साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली
वर्तमान में 'दलित महिला' पर शोध कार्य कर रही हैं।
अनुरूपी लेखक शोध पर्यवेक्षक

प्रो. (डॉ) अनामिका कौशिवा

अर्थशास्त्र विभाग

साहू स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली

वर्तमान में विभागाध्क्षक के रूप में कार्यरत हैं। इनके भारतीय अर्थशास्त्र समस्याओं पर कई शोधपत्र प्रकाशित हो चुकेहै।।